जिंदगी ऐसे है....

"क्या तुम्हे लगते है कि मैं तुम्हे इतने आसान से भूल सकता हूँ"? देव के मन इसी बात को सोचकर स्वयं पीडित हो रहा था। "जिंदगी तुम्हारे सात जीने का आशा था पर तुमने ऐसा क्यों किया?। दिन या रात जब भी वह अकेलापन रहता यही बात वह अपने मन से बार-बार पूछता रहता। बहुत समय पहले की बात है। अपने बचपन के सहेली "मित्रा" एक खुबसूरत लडकी थी। पता नही कैसे पर उनके बीच के दोस्ती धीरे-धीरे प्यार मे बदलते जा रही थी। उनके आपस मे शादी करने का फैसला अपने परिवार वालो को पसंद नही आयी। पर यह बात उन्हे दूर नही कर सकती थी। वह दूर एक जगह जाकर शादी किया। तभी देव अपने अ हाथ आगे बढाकर कहा, "आज से हम शुरू करेगे तो जिंदगी जिसके हमे हमेशा प्रतीक्षा था। वादा करो कि तुम हमेशा मेरे सात ही रहोगे"। तब मित्रा ने एक छोटी सी मुस्कुराकर मुस्कुराहट देकर कहा.., "जरूर"। और देव के हात पकडकर आगे च खुशी से चलने लगी।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पर उनके बीच के यह खुशी ज्यादा नहीं रही। कुछ दि महीनो बाद अपने जिंदगी ही बदलने वाली एक नुकसान उनके जीवन मे आ पडी। समय निकलते मित्रा को एक बडी बिमारी हो गये जिसके वजह से वह ठीक से खड़े भी हो नही पा रही थी। वह अपने पलंग से उठकर महीने हो गया। इन सब के बावजूद भी देव के मित्रा से प्यार थोडी सी भी कम नही हुआ। जब देव उसे डॉक्टर के पास ले गये थे तब डॉक्टर ने उसके बिमारी के कारण बहुत ही बुरे अंतरीक्ष में रहने का कहा। देव डॉक्टर को जब पूछा कि इसको कोई इलाज नही है? तब डॉक्टर के यह न सुनकर देव पुरा टूट गया। वह वापस आकर मित्रा के पास उसके हात पकडकर बैठा। यह सब ही होकर भी मित्रा के चहरे में कुछ भी दुख नही थी। वह हमेशा देव से मुस्कुराते ही थी क्योंकि उसे पता था अगर वह भी रोने लगे तो देव वह सह नही पायेंगे। और मित्रा ने उससे कहा, "देखो सभी का जिंदगी हमेशा खुश नही रहती। जिंदगी के हर समय खुश हो तो

उसे कोई अर्थ नहीं होती । समय हो गया है मेरी ~~मने~~ जाने की । तुम्हारे जीवन में पहले खुशी होकर मैं आई थी पर अब दुख हूँ पर मेरे जाने के बाद वापस जरूर आएँगे वो खुशी वापस एक दिन... जरूर"..... । वह रोने लगी जोर से...और बादल भी । अचानक आई पीछे से अपने दोस्त की आवाज, "अब कितना देर ऐसे रुकना चाहते हो यहाँ ? न आएँगे तुम्हारे मित्रा वापस"! । यह पाँच साल में हर एक दिन देख जाता है वह जगह जहाँ उनके जिंदगी में खुशियो का रंग छाई थी जहाँ वह दो एक आत्मा वाले दो शरीर बने थे । वह हमेशा चाहता था कि मित्रा के यादो ~~के~~ ~~बरे~~ पिंजडे से बाहर निकलने का पर कर नहीं पाया । वह आँसुओं से भरे आँख पोंछकर अपने आप से कहा,– कि "हाँ समय आ गया है अब चलने का... यहाँ से और उसके यादो से भी..... । वह धीरे चलने लगी । और एक बार आखिर में पीछे मुडकर देखा और मुस्कुराकर आगे चलना लगी...

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)